

1

वस्तु चित्रण (Object Drawing)

1.0 भूमिका

हम प्रातः से सायं तक विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को देखते हैं जैसे गिलास, सुराही, कप, पुस्तक एवं विभिन्न प्रकार के फल व सब्जियाँ इत्यादि। इन वस्तुओं को देखकर उनके स्वरूप का चित्रण करने की इच्छा हम सबके मन में होती है।

सामने रखी किसी भी वस्तु के स्वरूप के चित्र में वस्तु का आकार, सौन्दर्य तथा रंग सामने रखी वस्तु की तरह दिखना चाहिये। यदि कोई दूसरा व्यक्ति आपके चित्र को देखे तो समझे कि आपके चित्र में बनी वस्तु सामने रखी वस्तु के अनुरूप ही है। कैमरे के आविष्कार से पहले कलाकार वस्तुओं के चित्र इसी प्रकार से कागजों पर बनाते थे।

1.1 उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन करने के पश्चात आप –

- परिदृष्टि (Perspective) का अपने विवेक के आधार पर सही चित्रण कर सकेंगे;
- छाया-प्रकाश (Light & Shade) का अन्तर समझ सकेंगे;
- वस्तुओं के आपसी अनुपात को प्रदर्शित कर सकेंगे;
- वस्तु के स्वाभाविक रंगों को अपने चित्र में दिखा सकेंगे।

1.2 सामान्य परिचय

नेत्र दशा या परिदृष्टि (Perspective)

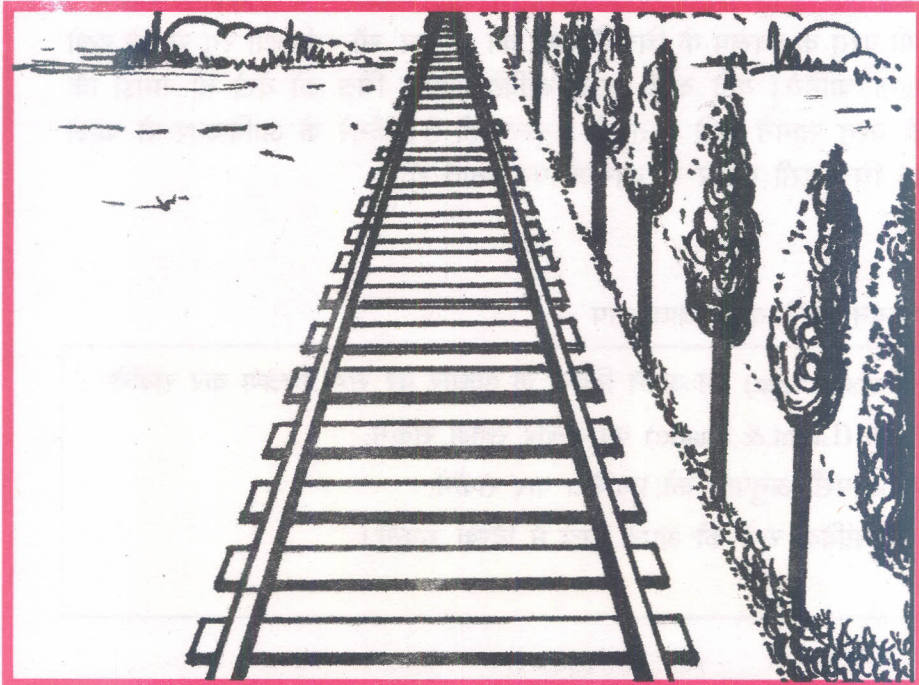
नेत्र दशा को पेंटिंग के संदर्भ में अंग्रेजी में पर्सपेक्टिव (Perspective) कहते हैं। इसमें सबसे पहले हमें 'आँखों की सतह' निश्चित करने की आवश्यकता होती है। वस्तु चित्रण करते समय हमारी आँख की सतह हमेशा क्षितिज (Horizon) पर जाकर मिलती है। जब कोई चीज हमारी दृष्टि से दूर होती है तो उसका स्वरूप छोटा होता दिखाई देता है जबकि वह समान आकार की होती है। उदाहरण के लिये यदि हम रेलवे लाईन के बीच में खड़े हो जायें तो दोनों लाईनों समानांतर होने पर भी वे हमें एक निश्चित दूरी पर मिलती नजर आती हैं। मिलने पर जो बिन्दु नजर आता है वही मिलन केन्द्र बिन्दु कहलाता है। (चित्र 1.1) यही बिन्दु ही हमारी आँखों के नेत्र स्तर (Eye Level) का केन्द्र बिन्दु है। इसी प्रकार रेल की पटरियों के साथ लगे पेड़ों को देखने पर हमें आगे आने वाले पेड़ छोटे होते हुए दिखाई देंगे तथा उनके बीच की दूरी कम होती दिखाई देगी, यद्यपि वे सब एक दूसरे से बराबर दूरी पर स्थित हैं तथा ऊँचाई में भी बराबर हैं।

नेत्र दशा को तीन भागों में बाँटा जा सकता है:

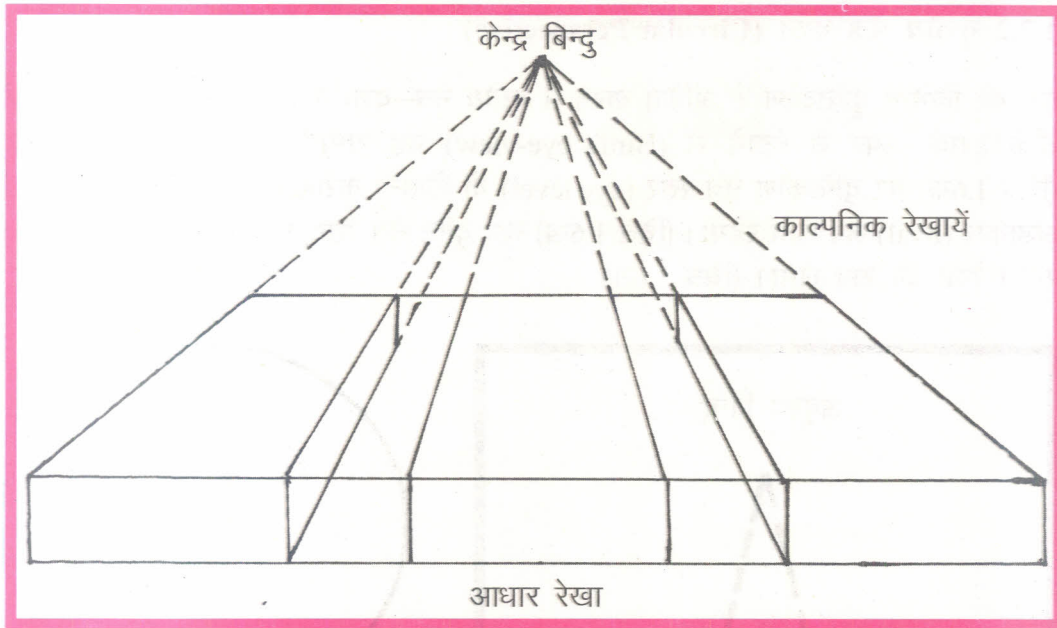
1. रेखीय नेत्र दशा (Linear Perspective)
2. वृतीय नेत्र दशा (Circular Perspective)
3. रंग नेत्र दशा (Colour Perspective)

1.2.1 रेखीय नेत्र दशा (Linear Perspective)

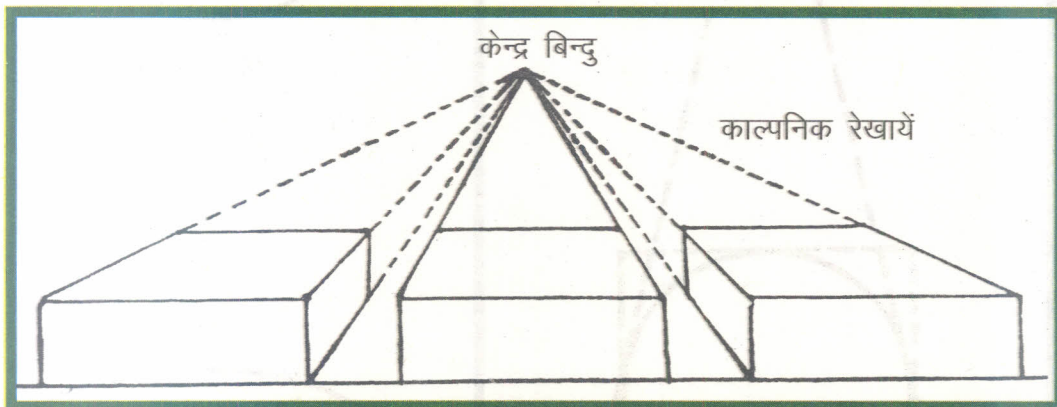
रेखीय नेत्र दशा में कोई भी वस्तु जैसे-जैसे हमारी दृष्टि से दूर होती जाती है वैसे-वैसे वह वस्तु लम्बाई में छोटी होती चली जाती है। प्रत्येक वस्तु की पड़ी रेखायें अथवा खड़ी रेखायें आधार पर लम्ब होती हैं। यदि ये रेखायें आधार पर लम्ब न हों तो कोई भी वस्तु आधार पर खड़ी नहीं दिखाई जा सकती है। आधार पर खड़ी लाईनों को टेढ़ा करते ही वह वस्तु गिरती हुई दिखाई देने लगेगी। उदाहरण के लिये एक आयताकार बॉक्स पृथ्वी पर इस प्रकार रखिये कि इसके दोनों पार्श्व (sides) तथा इसका ऊपरी हिस्सा हमें दिखाई दे। इस बॉक्स की ऊँचाई प्रकट करने वाला लम्ब (Perpendicular) किनारा जो दृष्टि के सबसे निकट है, सबसे बड़ा तथा जो दूर है, वह उससे छोटा तथा तीसरा जो कि दोनों किनारों से दूर है सबसे छोटा दिखाई देगा। बॉक्स के पार्श्व (sides) की लम्ब रेखाओं के अतिरिक्त सभी रेखायें परस्पर समानांतर हैं जोकि आगे बढ़ाये जाने पर मिलती हुई दिखाई देती हैं, जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।



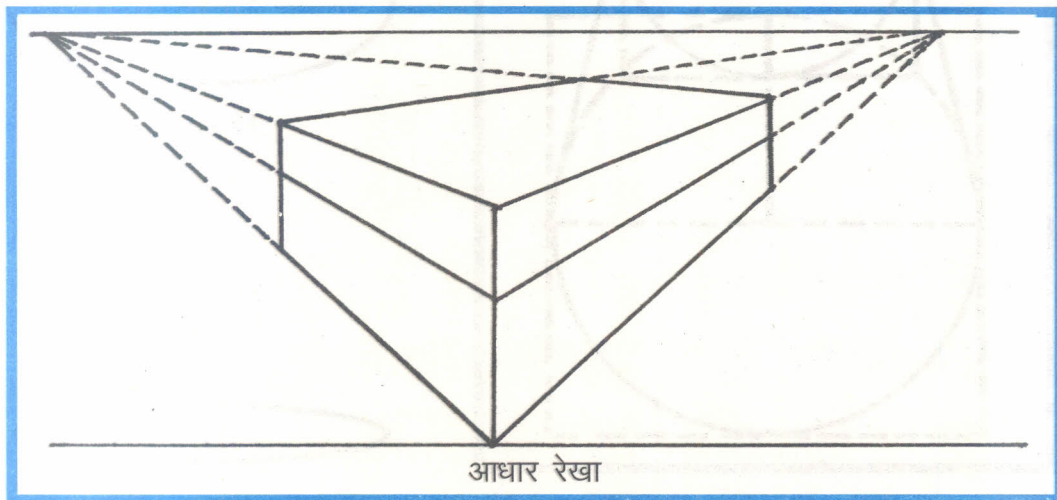
चित्र 1.1



चित्र 1.2



चित्र 1.3



चित्र 1.4

1.2.2 वृत्तीय नेत्र दशा (Circular Perspective)

वृत्त को विभिन्न दृष्टिकोण से अंकित करने में वृत्तीय नेत्र-दशा का योगदान है। एक वृत्त को ठीक इसके ऊपर से देखने से (Bird's eye-view) यह सम्पूर्ण गोलाकार दिखाई देगा। (चित्र 1.6क) पर दृष्टिकोण नेत्र स्तर (eye level) के जितना करीब होता रहेगा वृत्त उतना ही अंडाकार (oval) रूप लेता रहेगा। (चित्र 1.6ख) जब दृष्टि नेत्र स्तर के बराबर होगी तो यह एक सरल रेखा का रूप लेगा। (चित्र 1.6ग)

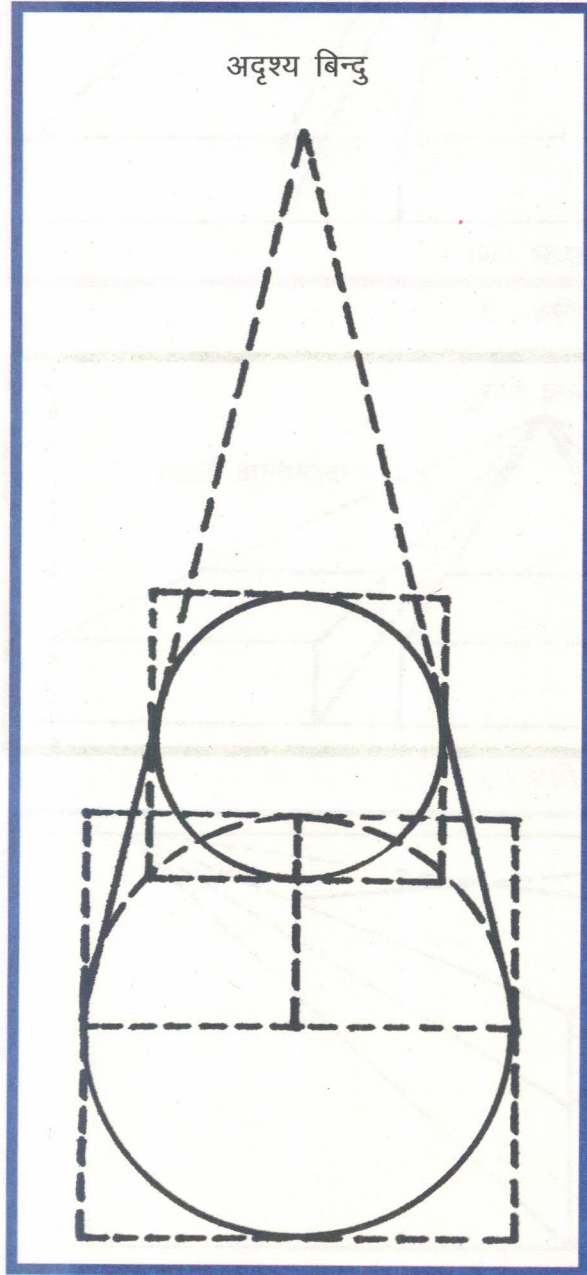
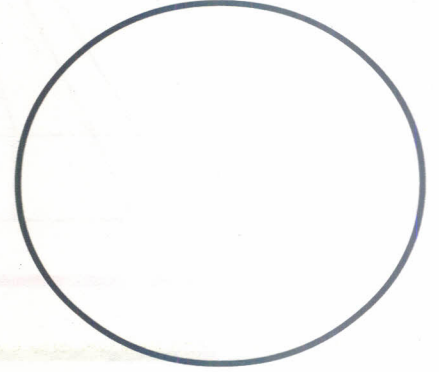
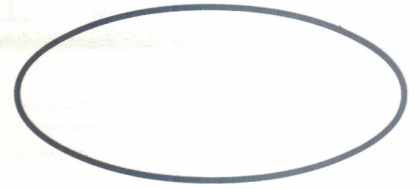


Fig. 1.5



चित्र 1.6 क



चित्र 1.6 ख



चित्र 1.6 ग

1.2.3 रंग नेत्र दशा (Colour Perspective)

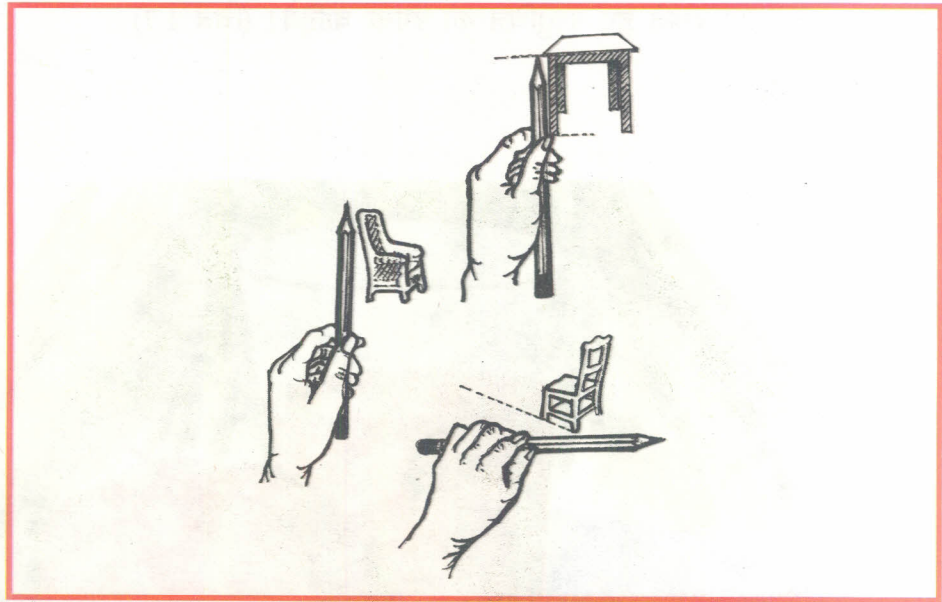
कोई भी वस्तु-चित्रण तब तक पूर्ण नहीं होता है जब तक कि उसमें रंग न भरा जाय। वस्तु-चित्रण में रंग भरते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि वस्तु-चित्र हमें उस वस्तु की प्रामाणिकता का बोध कराये जिसका कि हमने चित्र बनाया है। वस्तु की गोलाई या चौड़ाई चित्र में अवश्य प्रदर्शित होनी चाहिये जिससे कि चित्र देखने से मालूम हो कि वस्तु गोल है या चौकोर। इसके दूर और निकट की वस्तुओं में अन्तर दिखाने के लिये चित्रभूमि पर रंगों में अन्तर लाना आवश्यक होता है। जैसे कि समीप की वस्तुओं में जब हम रंग भरते हैं तो उष्ण एवं वास्तविक रंग भरते हैं किन्तु दूर की वस्तुओं में जब रंग भरते हैं तो उनमें धुंधलापन दिखाते हैं। रंगों में जितना धुंधलापन होगा उतनी ही दूरी प्रतीत होगी। वस्तुचित्र में रंग भरते हुए प्रकाश और छाया का पूर्ण ध्यान रखते हुए वस्तुचित्र को रंगना चाहिये। (चित्र 1.7)



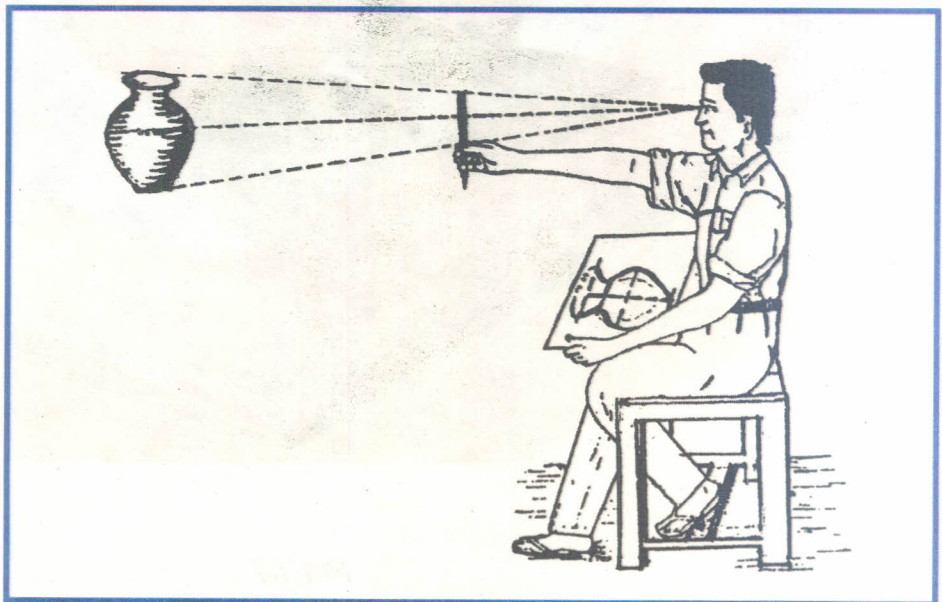
चित्र 1.7

1.3 वस्तुओं को नापने का ज्ञान

किसी भी वस्तु का चित्रण करते समय उस वस्तु के ठीक-ठीक अनुपात का ज्ञान होना आवश्यक होता है। छोटी-छोटी वस्तुएं तो केवल देखकर बिना नाम के चित्रित की जा सकती हैं परन्तु बड़े आकार की वस्तु का नाम अवश्य होना चाहिये। किसी भी वस्तु का सही नाम लेने के लिये सबसे पहले स्टूल अथवा कुर्सी पर कमर को सीधा करके बैठना चाहिये। एक बड़ी पेंसिल अथवा लंबी लकड़ी को इस प्रकार पकड़ना चाहिये जिससे छोटी ऊँगली नीचे और तीन ऊँगलियाँ ऊपर हों और अँगूठे को इस प्रकार रखें ताकि वस्तु की नाप के अनुसार ऊपर नीचे सरकता रहे। एक आँख बंद करके हाथ को कन्धे की बिल्कुल सीध में करके वस्तु का नाप लेना चाहिये। (चित्र 1.8 और 1.9)



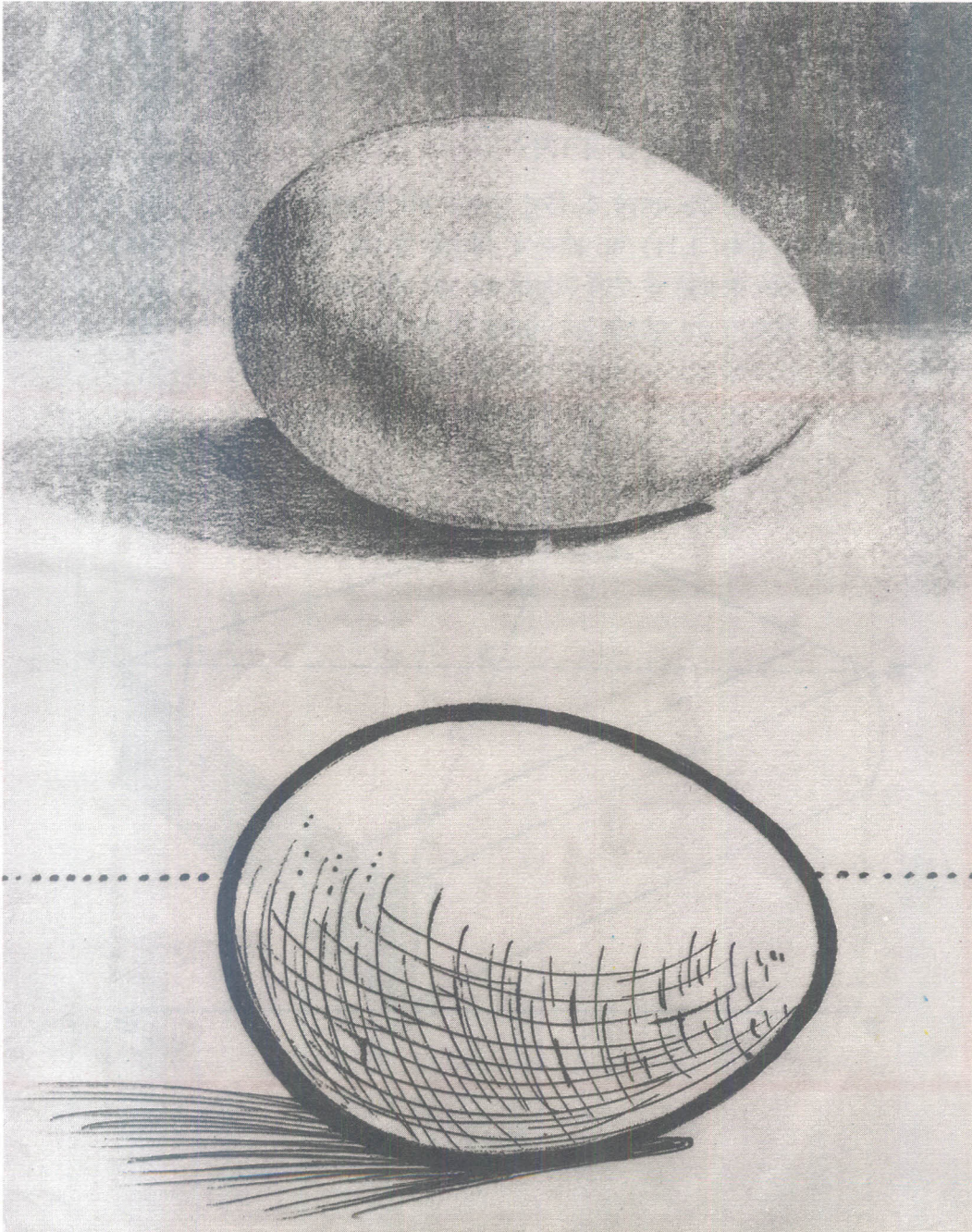
चित्र 1.8



चित्र 1.9

1.4 वस्तु चित्रण में छाया व प्रकाश का ज्ञान

आपके सामने रखे वस्तु चित्र में केवल बाह्य रेखाओं द्वारा बनाया हुआ चित्र अपूर्ण है जब तक कि उसमें छाया व प्रकाश न दिखाई दे। छाया व प्रकाश दिखाने से वह वस्तुचित्र ठोस व सजीव लगने लगता है। छाया व प्रकाश के लिये कमरे की खिड़की व दरवाजे को खोल देने से सामने रखी वस्तु पर जिस ओर से प्रकाश आता है वस्तु का वह हिस्सा हल्का तथा दूसरी तरफ का हिस्सा गहरा दिखाई देगा तथा प्रकाश के विपरीत का हिस्सा अधिक गहरा दिखाई देगा। वस्तु चित्रण करते समय हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि वस्तुचित्र पर किस ओर से प्रकाश आ रहा है तथा किस ओर से छाया पड़ रही है। अधिक चमकदार वस्तुओं जैसे काँच, पीतल तथा स्टील में सफेद झिलमिल प्रकाश चमकता है तो उसे हम अतिप्रकाश (High Light) कहते हैं। (चित्र 1.10)



चित्र 1.10

1.5 वस्तु चित्रण की तैयारी:

सामग्री:

वस्तु-चित्रण से पहले प्रयोग में आने वाली सामग्री जैसे पेंसिल, पेपर, रंग, ड्राईंग पिन, क्लिप तथा ड्राईंग बोर्ड आदि तैयार रखना चाहिये।

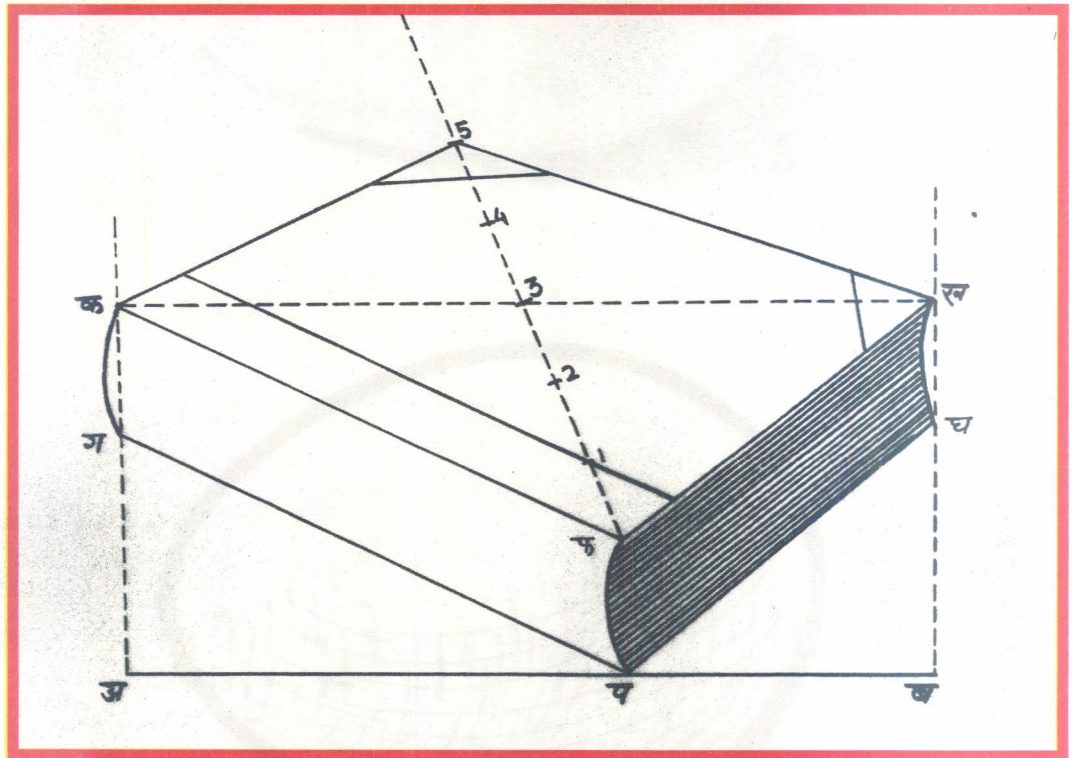
हमें वस्तु (मॉडल) को हमेशा समतल (Eye Level) से नीचे रखना चाहिये। सर्वप्रथम एक वस्तु का ही चित्रण पेंसिल द्वारा किया जाना चाहिये।

वस्तु चित्रण से पहले ड्राईंग शीट को ड्राईंग बोर्ड पर ड्राईंग पिन द्वारा बोर्ड के बीचों बीच सैट किया जाना चाहिये।

हमें सामने रखे मॉडल को देखकर यह निर्णय करना है कि मॉडल चित्र को लम्बाई में रखें या चौड़ाई में रखें।

1.6 आयताकार पुस्तक कैसे बनाएं?

आयताकार पुस्तक का चित्र बनाने के लिए पुस्तक की चौड़ाई नापें और 'अ' से 'ब' तक एक आधार रेखा खींचें। (चित्र 1.11) 'अ' और 'ब' बिंदुओं से लंब रेखाएं खींचें जो आधार रेखा 'अ' 'ब' से आधी हों। लंब रेखाओं के शीर्ष बिंदुओं को 'क' और 'ख' चिन्हित करें। पुस्तक की लंबाई नापकर उसे 'प' निशान दें। पुस्तक की मोटाई के अनुसार 'प' के ऊपर 'फ' बिंदु को चिन्हित



चित्र 1.11

करें। 'क' बिंदु के नीचे 'ग' बिंदु और 'ख' के नीचे 'घ' बिंदु चिन्हित करें जो 'प' और 'फ' से अपेक्षाकृत कुछ छोटा होना चाहिए। अब 'क' को 'ख' और 'फ' से जोड़ें और 'ग' और 'घ' को 'प' से जोड़ें। अब 'क' और 'ख' को जोड़ें और इस रेखा के बीचों-बीच 3 की संख्या मार्क करें। इस बिंदु को 'फ' बिंदु से जोड़ें और इसे तीन बराबर भागों में विभाजित करें। इस विभाजन रेखा को 3 की संख्या के बिंदु से ऊपर ले जाकर 4, 5 और 6 बराबर के भाग बनाएं। अब बिंदु 5 को 'क' और 'ख' से जोड़ें।

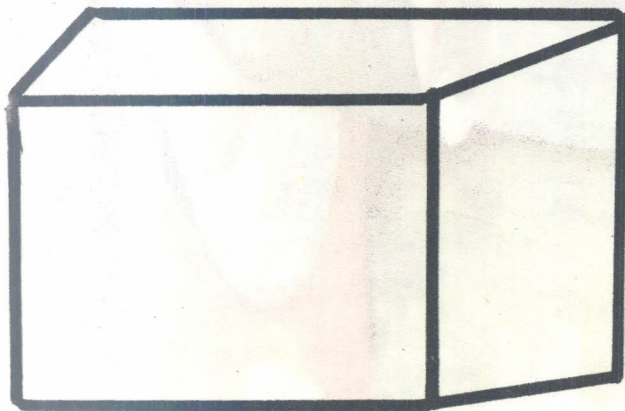
आपकी पुस्तक का रेखा-चित्र (जैसे चित्र सं० 1.11 में दिया गया है) तैयार है।

1.7 सारांश

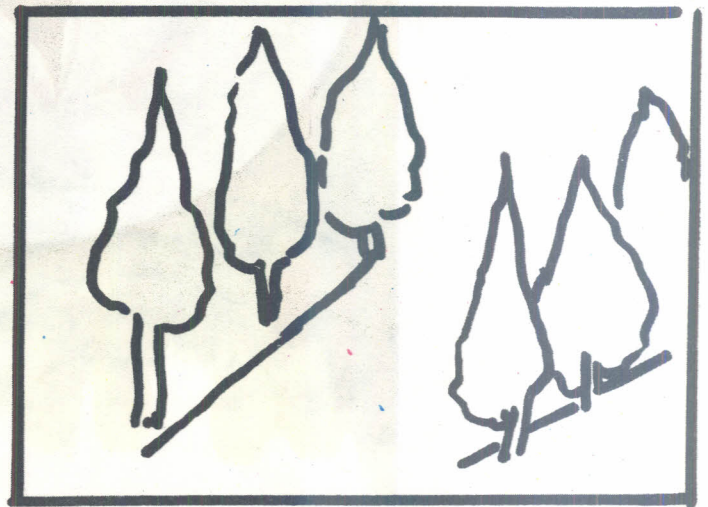
एक कला विद्यार्थी के लिए वस्तु चित्र के कई तत्व तथा तकनीक जानना आवश्यक है। जैसे परिदृश्य (Perspective), छायाप्रकाश (light and shade) तथा संयोजन (composition) की रीतिप्रक्रिया आदि जानना आवश्यक है। शुरु-शुरु में वस्तु का त्रि-आयामी (Three dimensional) रूप उपलब्ध करने का अभ्यास करना पड़ेगा। इसके पश्चात विन्यास (Texture) तथा प्रभावीत्पादकता (value) की विस्तार रचना की जायेगी। निरंतर अभ्यास से विश्वास बढ़ेगा तथा सही वस्तु चित्रण कर सकेंगे।

1.8 मॉडल प्रश्न

- (क) नीचे दिए चित्र 1 और 2 में गलतियां बताइए और उसे सही कीजिए।
- (ख) टेबल पर एक बक्स रखें और सामने से देखकर उसका चित्र बनाइए।
- (ग) एक सेब टेबल पर रख उसका चित्र बनाइए।
- (घ) किताब पर रखे सेब के चित्र को देखें। अब उसी तरह से पांच प्याज रखें और उनका चित्र बनाए।
- (ङ) एक गेंद को चौकोर बक्स के पास रखें और दूसरी ओर लैंप को रखें, पेन्सिल से छाया व प्रकाश का अध्ययन करें। फिर इसी चित्र का जल रंग में अध्ययन करें।

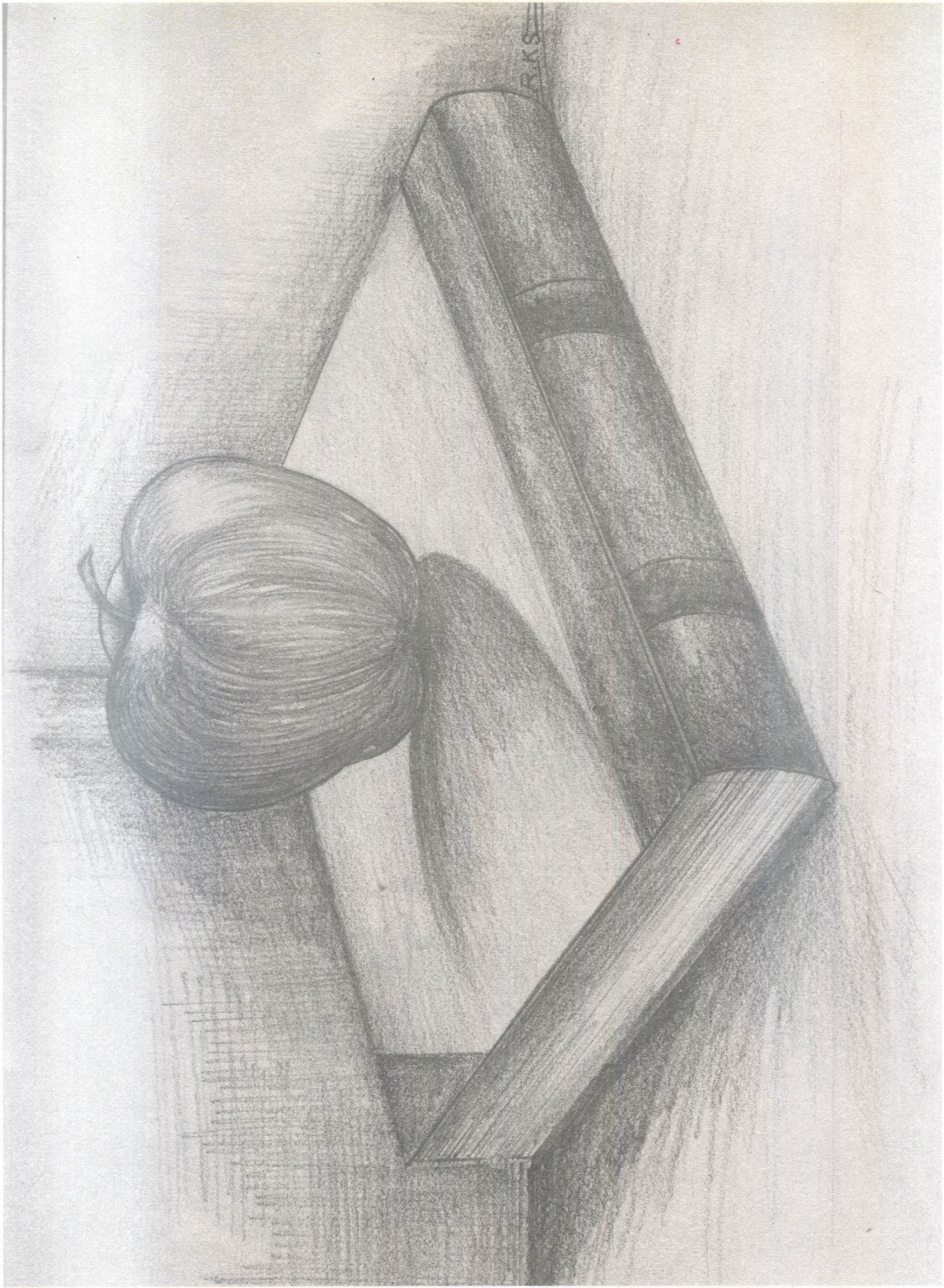


नं. 1

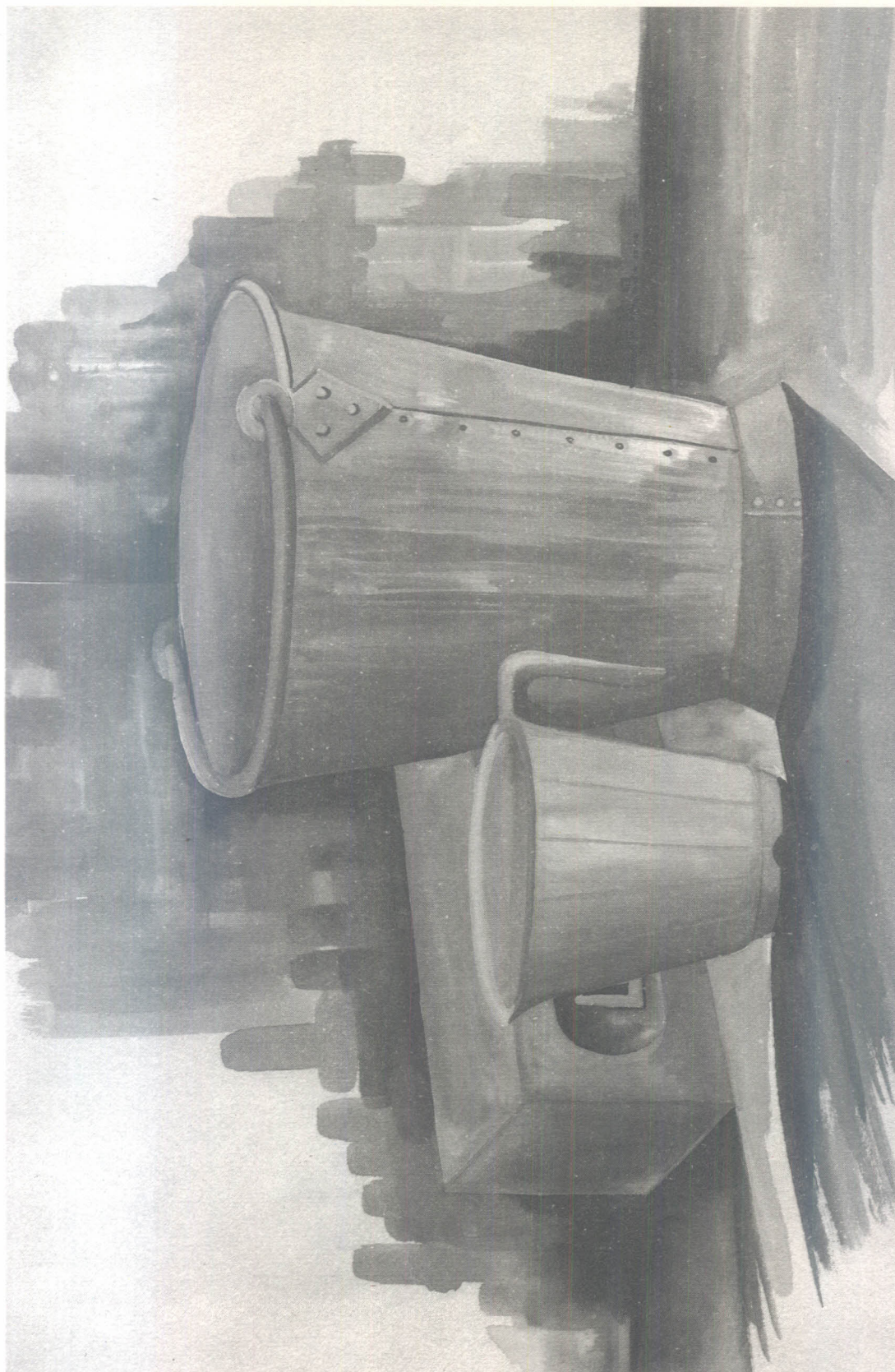


नं. 2

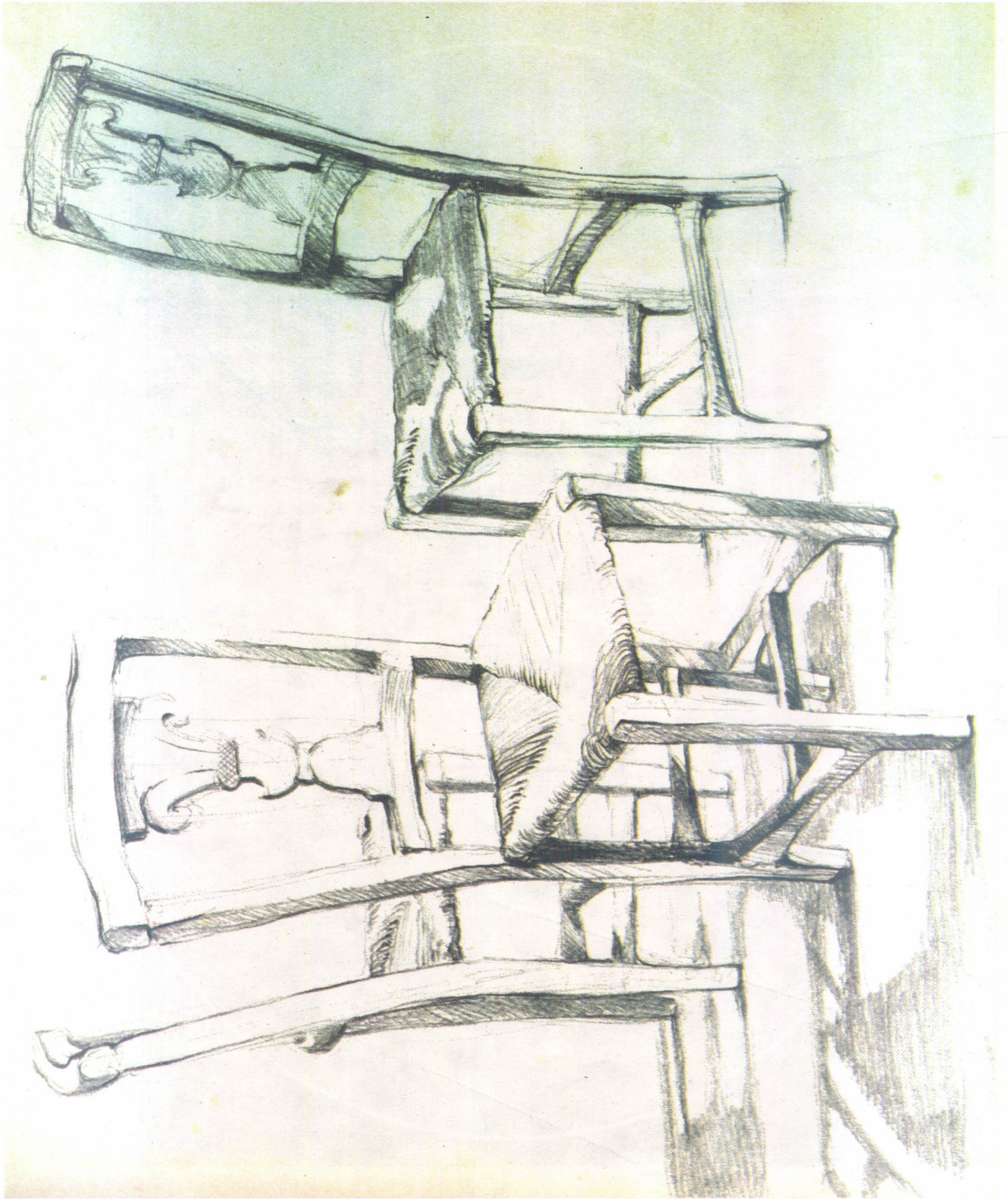


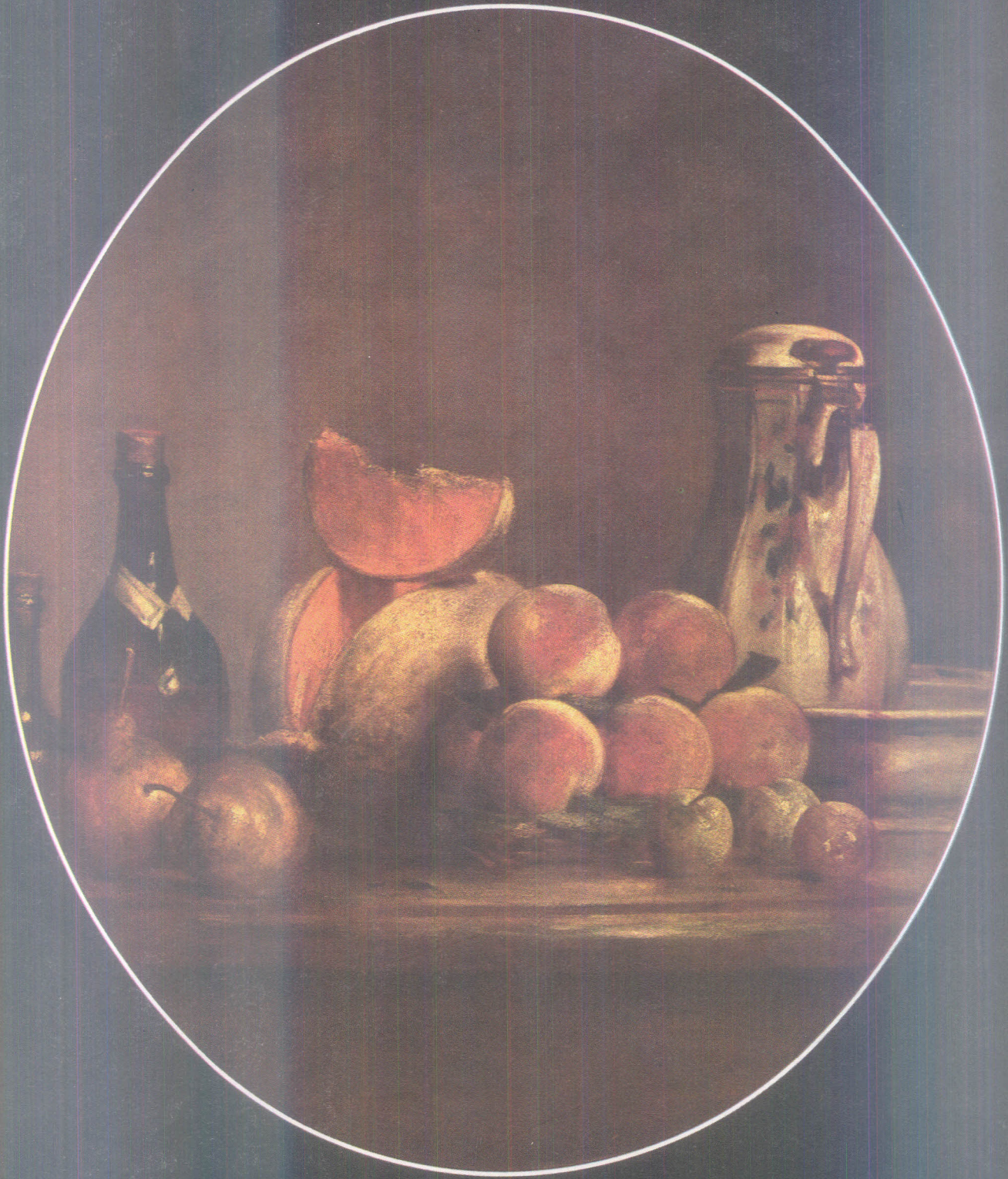




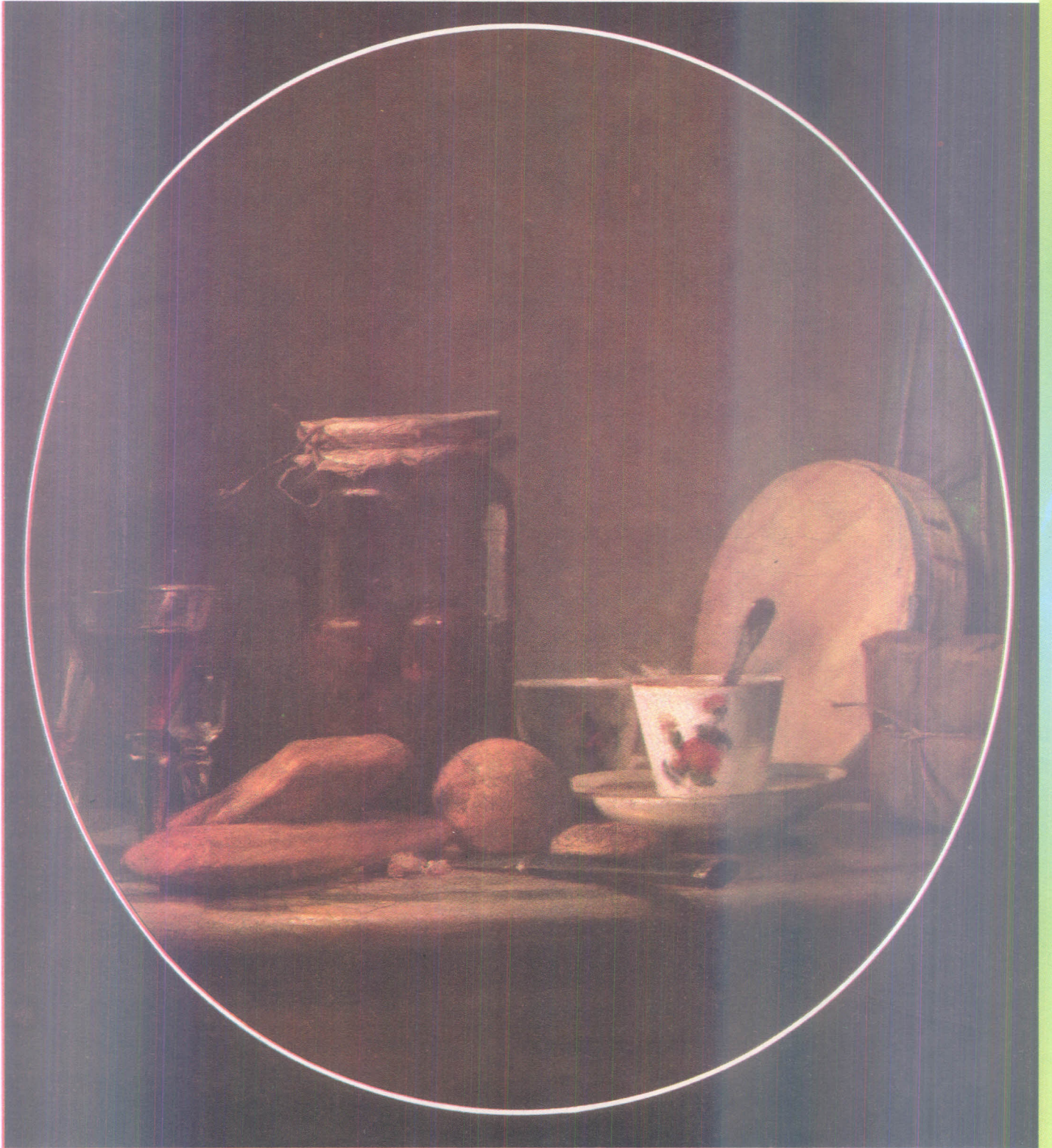








चित्रकार : सारदों



चित्रकार : सारदों